आभार

सर्वप्रथम मैं डा० वीरेन्द्र मेहंदीरत्ता की हृदय की गहराइयों से आभारी हूं, जिनके सुयोग्य निर्देशन, आत्मीय प्रोत्साहन और निरीक्षण के द्वारा ही यह शोधकार्य सम्पन्न हो सका । यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे डा० वीरेन्द्र मेहंदीरत्ता के निर्देशन में कार्य करने का अवसर मिला । वे स्वयं भी व्यंग्य विशेषज्ञ हैं । व्यंग्य पर सर्वप्रथम शोध प्रबन्ध इनके द्वारा ही प्रस्तुत किया गया था । इन्होंने समय-समय पर अपने मूल्यवान सुझावों द्वारा मेरी प्रत्येक उलझन को दूर कर मेरे शोध-पथ को प्रशस्त किया । इन्होंने मेरी प्रत्येक छोटी-बड़ी त्रुटि को धैर्य सुधारा और मुझे प्रोत्साहित किया । उनके प्रति आभार प्रकट करने के लिए आज मेरे पास शब्द नहीं है ।

अपने माता-पिता की भी आभारी हूं जिनके आशीर्वाद और निरन्तर प्रोत्साहन के फलस्वरूप ही मैं आज इस मुकाम पर पहुंच सकी । अपनी बहन रजनी, भाइयों -- अशोक, नीरज तथा प्रिय भांजी गुंजन की भी तहेदिल से आभारी हूं, जिन्होंने मेरी हर छोटी-बड़ी अड़चन को दूर करके मुझे सदैव प्रोत्साहित किया ।

अन्त में मैं अपनी प्रिय सहेलियों -- सुमन, रोज़ी और मनजीत के प्रति आभार प्रकट करती हूं, जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इस कार्य को सम्पन्न में करने में अपना योगदान दिया ।

पूनम शर्मा

पूनम शर्मा